सप्तम प्रश्न पत्र : भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा

प्रस्तावना

साहित्य आद्यंत एक भाषिक निर्मित है। साहित्य के गंभीर अध्ययन के लिए भाषिक व्यवस्था का सुस्पष्ट सर्वांगीण ज्ञान अपरिहार्य है। भाषा विज्ञान भाषा की वस्तुनिष्ठ अध्ययन प्रणाली के रूप में भाषिक इकाइयों तथा भाषा संरचना के विभिन्न स्तरों पर उनके अंतस्संबंधों के विन्यास को आलोकित कर न केवल अध्येता को भाषित अंतर्दृष्टि देता है। अपितु भाषा-विषयक विवेचन के लिए एक निरूपक भाषा भी प्रदान करता है। मूल भाषा व्यवस्था पर आरोपित द्वितीयक साहित्यक व्यवस्था की भाषिक प्रकृति की स्वीकृति, प्राचीन भारतीय एवं अधुनातन पाश्चातय साहित्य चिंतन में समान रूप से लक्षणीय है। कहने की आवश्यकता नहीं कि भाषा के साहित्येतर, प्रयोजनमूलक रूपों के अध्ययन में भी भाषा वैज्ञानिक चिंतन का लाभ उतना ही महत्वपूर्ण है।

भाषा वैज्ञानिक आधार पर हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक विकासक्रम, भौगोलिक विस्तार, भाषिक स्वरुप, विविधिरूपता तथा हिन्दी में कम्प्यूटर सुविधाओं विषयक जानकारी एवं देवनागरी के वैशिष्ट्य, विकास और मानकीकरण का विवरण हिन्दी के अध्येता के लिए अत्यंत उपयोगी है।

पाठ्य विषय

(क) भाषा विज्ञान

भाषा और भाषा विज्ञान : भाषा की परिभाषा और अभिलक्षण, भाषा-व्यवस्था और भाषा-व्यवहार भाषा-संरचना और भाषिक-प्रकार्य। भाषाविज्ञानः स्वरूप एवं व्याप्ति, अध्ययन की दिशाएँ-वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्क।

स्वनप्रक्रिया : स्वनविज्ञान का स्वरूप और शाखाएँ, वागवयव और उनके कार्य, स्वन की अवधारणा और स्वनों का वर्गीकरण, स्वनगुण, स्वनिक परिवर्तन। स्वनिम विज्ञान का स्वरूप, स्वनिम की अवधारणा, स्वनिम के भेद, स्वनिमिक विश्लेषणं

व्याकरण : रूपप्रक्रिया का स्वरूप और शाखाएँ, रुपिम की अवधारणा और भेदः मुक्त-आबद्ध, अर्थदर्शी और संबंधदर्शी, संबंधदर्शी रूपिम के भेद और प्रकार्य। वाक्य की अवधारणा, अभिहितान्वयवाद और अन्वितभ्धिानवाद, वाक्य के भेद, वाक्य-विश्लेषण, निकटस्थ-अवयव विश्लेषण, गहन संरचना और बाह्य-संरचना

अर्थविज्ञान : अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ का संबंध, पर्यायता, अनेकार्थता, विलोमता, अर्थ-परिवर्तन।

साहित्य और भाषा-विज्ञान : साहित्य के अध्ययन में भाषा-विज्ञान के अंगों की उपयोगिता।

(ख) हिन्दी भाषा

हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ - वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएँ। मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ- पालि, प्राकृत-शौरसेनी, अर्धमागधी, मागधी, अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँ। आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण

हिन्दी का भौगोलिक विस्तार : हिन्दी की उपभाषाएँ, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी और उनकी बोलियाँ। खड़ी बोली ब्रज और अवधी की विशेषताएँ।

हिन्दी का भाषिक स्वरूप : हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था-खंड्य, खंड्येतर। हिन्दी शब्द रचना-उपसर्ग, प्रत्यय, समास। रूपरचना-लिंग, वचन और कारक-व्यवस्था के संदर्भ में हिन्दी के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रियारूप। हिन्दी वाक्य-रचनाः पदक्रम और अन्विति।

हिन्दी के विविध रूप : संपर्क-भाषा, राष्ट्रभाषा,राजभाषा के रूप में हिन्दी, माध्यम-भाषा, संचार-भाषा, हिन्दी की सांविधानिक स्थिति।

देवनागिरी लिपि : विशेषताएँ और मानकीकरण।